वास्तु-शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में भवन निर्माण के गुण-दोष

अशोक कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक 'ब'
राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की

वास्तु अथवा स्थापत्य का भारतीय दर्शन

सभी प्रमाणिक शास्त्रों का मूल वेद है। 'वास्तु' अथवा 'स्थापत्य' की प्रतिष्ठा अथर्ववेद के 'उपवेद' के रुप में हुई है, जिस समस्त कलाओं के उदगम स्थल के रुप में मान्यता प्राप्त है। मूल रुप से ज्योतिष के तीन भाग हैं - सिद्धांत, संहिता एवं होरा। इसके 'संहिता-स्कंध में वास्तु का वर्णन मिलता है। प्रस्तुत लेख में मैंने भवन निर्माण के ऐसे पहलू को लिया है, जो वास्तव में भारत की अत्यन्त प्राचीन और तत्कालीन बहुप्रचलित विधि रही तथा यहॉ के निवासियों, जनसामान्य द्वारा बहुधा उपयोग में लायी जाती रही। उस समय आजकल जैसी जानपद अभियांत्रिकी का आधुनिक प्रौद्योगिकी का विकल्प सुलभ नहीं था और ना ही था आर्किटेक्चरल विधा। आइए जानें इस प्राचीन 'वास्तु शास्त्र' विधा के कुछ गुप्त रहस्य। प्रस्तुत लेख में हमने 'वास्तु' पर विभिन्न दृष्टिकोंण पर उपलब्ध सामग्री को संकलित कर यहॉ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

चूँकि 'भवन' अथवा 'गृह' मानव की एक अपरिहार्य आवश्यकता है, वास्तुकला की दृष्टिकोंण से भवन निर्माण का कोंण बहुत ही व्यापक है और यह कार्य धर्म पर आधारित है। कहते हैं कि चार पुरुषार्थो- 'धर्म', 'अर्थ', 'काम' एवं 'मोक्ष' में 'धर्म' का स्थान सर्वप्रमुख है। यह धर्म ही हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्राण रहा है। धर्म का अभिप्राय उन प्राचीन मूल्यों और कठोर नियमों से है, जो सनातन और सास्वत हैं तथा मानव और मानवता के अभ्युत्थान के कारक तत्व हैं । वास्तु अथवा स्थापत्य के मूल में भी यही विद्यमान है। भारतीय स्थापत्य को धर्म और देवताओं के बिना न ही प्रारंभ किया जा सकता और ना ही उसकी कल्पना की जा सकती। भवन निर्माण का कार्य वस्तुतः धार्मिक कृत्य 'यज्ञ' के रुप में प्रतिष्ठित रहा। परन्तु, समय के साथ इसका धार्मिक, संस्कृतिक और वैज्ञानिक पक्ष काल के गाल में समा गया। भारतीय 'वास्तु' अथवा 'भवन निर्माण' अथवा 'स्थापत्य' कला एक विशुद्ध विज्ञान है। प्राचीन काल का स्थापत्य, चिकित्सा, संगीत एवं अर्थोपार्जन हेतु अलग-अलग उपवेद कल्पित हुए हैं। भारतीय वास्तु का इतिहास बहुत ही पुराना है, जिसे शब्दों में व्याख्या करना सरल नहीं है। इसका अपना एक पूर्ण व्यवस्थित शास्त्र है, जिसे कला, विज्ञान, अध्यात्म और दर्शन का एक मिश्रित स्वरुप कहा जा सकता है। समस्त भारतीय कलाओं का उदभव एवं आधार मात्र मनोरंजन न होकर धर्म तथा दर्शन है, जिसके मूल में आध्यात्म है।

सामान्यतया मकान अथवा भवन मानव की मूलभूत आवश्यकता है और वह भोजन, कपड़ा के पश्चात् मकान की ओर ही उन्मुख होता है। लेकिन प्रायः यह देखने में आता है कि भवन निर्माण के पश्चात् बिना कुछ सोचे समझे उसमें निवेश कर बैठता है। भवन का मुख किस ओर होना चाहिए और किस पद (जगह) पर कौन सी वस्तु होनी चाहिए और कौन सी जगह व्यर्थ है आदि की सम्यक एवं समन्वित जानकारी हमें तभी मिल सकती है, जब हम इस भारतीय चिर-प्राचीन स्थापत्य कला के ज्ञान, विज्ञान के प्रमुख कारणों को सही रुप में समझ लें। इस कला में वास्तु ब्रह्म अथवा वास्तु पुरुष का मंत्रोच्चारण से आवाहन होता है, जिसके मूल में हम यों कहें कि यह एक ऐसी अद्‌भुत प्रक्रिया है, जिसके जरिए

हम निराकार ब्रह्म की साकार रुप में प्रतिस्थापना का कार्य करते हैं, जिससे हमें धन-धान्य और 'श्री' की आजीवन पूर्ति होती रहे। इस विश्वास का संबंध आस्था से कही अधिक जुड़ा है। यह एक ऐसा प्रयास कह सकते हैं, जो एक बूँद में सागर अथवा गागर में सागर भरने के तुल्य है।

वास्तु में भूमि के आकार-प्रकार, ऊँचाई-नीचाई का महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तु ग्रंथों के अतिरिक्त लगभग समस्त धर्म ग्रंथों में वास्तु के बहुमूल्य सिद्धांत बिखरे पड़े हैं, इससे न केवल वास्तु की प्रमाणिकता साबित होती है, वरन् उसका धार्मिक, व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक पक्ष की भी पुष्टि होती है। यही कारण है कि प्राचीन भारत में धर्म, दर्शन और ज्योतिष विषयों का ही अध्ययन होता था।

वास्तु में पृथ्वी तत्व का महत्व

वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड में वास्तु का एक बहुत ही रोचक प्रसंग मिलता है, जिसके अनुसार भगवान श्री राम प्रस्त्रवण गिरि पर भ्रमण करते हुए अपने निवास के लिए उपयुक्त जगह की तलाश करते हुए पर्वत की सुंदरता का बखान करते हुए एक स्थान पर रुक कर अपने अनुज श्री लक्ष्मण से कहते हैं- लक्ष्मण! इस स्थान को जरा गौर से देखो, इस स्थान का ईशान नीचा तथा इसका दक्षिण-पश्चिम हिस्सा ऊँचा है। अतः यह पर्ण-कुटी हेतु बहुत ही उपयुक्त स्थल है। यहीं पर पर्ण-कुटी का निर्माण करना श्रेयस्कर होगा। यह स्थल सिद्धिदायक एवं विजय दिलाने वाला है। कितना अनोखा प्रसंग है यह और यदि ध्यान से देखा जाय तो हमें इन धर्म-ग्रंथों के गूढ़ रहस्य स्वमेंव उजागर होते हुए प्रतीत होते हैं। ऐसे प्रसंगों की अन्य धर्म-ग्रंथों द्वारा भी पुष्टि की जा चुकी है।

कदाचित हमारे ऋषियों ने भूखण्ड में एक वास्तुपुरुष के लेटे होने की परिकल्पना की थी, जिसका सिर ईशान कोण की ओर था और पैर नैऋत्य कोण की ओर अर्थात पृथ्वी का वह आधार भाग (यानी भूखण्ड का आधार भाग) जिस पर शरीर का पूरा भार अवस्थित रहता है। ऐसी मान्यता है कि यह स्थल 'राहु' का है तथा भीतरी ओर इंद्र एवं जय नामक देवता निवास करते हैं। ये सारे देवता जीवन के अनेक आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं और अपने गुण दोष के अनुसार फलाफल देते हैं और यही वास्तु का लक्ष्य एवं आधार है। अब यदि इन विभिन्न तत्वों पर विचार करें तो इनके पारस्परिक संबंधों की पोल खुलती है- अस्तु पृथ्वी तत्व को सबसे अधिक वायु और अग्नि की अपेक्षा 'जल' तत्व से हानि की संभावना है। अतः जल का सामना होने पर पृथ्वी हार जाती है और जल के पृथ्वी तत्व को खा जाने के कारण अपना अस्तित्व तक खो देती है। वायु जल को निगल जाती है तथा अग्नि वायु को निगल जाती है। बिना वायु के अग्नि प्रज्वलित नहीं हो सकती। इससे भी सूक्ष्म तत्व 'अंतरिक्ष', 'आकाश' अथवा 'शून्य' है, जो सबका ही भक्षण करने योग्य है। वास्तु शास्त्र में इन्हीं का खेल चलता है। इसी आधार पर नैऋत्य को ऊंचा तथा ईशान को नीचे होने की बात कही जाती है। ऐसी मान्यता है कि उत्तर-पूर्व से चलने वाली तरंगें दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ती हैं, परन्तु यदि उन्हें इस ओर का स्थान बंद मिलता है तो ये पश्चिम-उत्तर 'भंडास-कोण' की ओर मुड़ जाती हैं और वहीं संग्रहीत होती रहती हैं, जो एक शुभ लक्षण है। इससे धन-धान्य की वृद्धि होती है।

वास्तु में जल तत्व की भूमिका

ऐसी मान्यता है कि यदि नैऋत्य में ऊचाई के स्थान पर गड्ढा हो और वहाँ जल भरा हो तो यह अत्यन्त खराब स्थिति मानी जाती है और यह निर्धनता का सूचक होता है। इसके विपरीत यदि ईशान में पृथ्वी तत्व की अधिकता कर दी जाय अर्थात निर्माण सामग्री आदि की यदि अधिकता

कर दी जाय तो भी स्थिति दयनीय ही समझें। यदि आपके भवन में बरसात का पानी नैऋत्य में न रुककर ईशान में बह जाता है तो यह स्थिति धनदायक होती है।

वास्तु में रंगों का प्रयोग

वास्तु शास्त्र चूँकि ग्रहों पर आधारित विज्ञान है और ग्रहों के अपने रंग-रुप, प्रकृति और गुण-धर्म होते हैं। अतः यह कहना समसम्यक होगा कि वास्तुशास्त्र के विज्ञान में भवन की वास्तु और भवन-स्वामी के ग्रह नक्षत्र आपस में जुड़े हुए माने जाते हैं। पुराणों में वर्णित है कि गृहस्वामी के जन्म नक्षत्र के मुताबिक घर की सजावट में रंगों का प्रयोग, घातु तथा सुगंध का प्रयोग करना परिवार के लिए सुख, समृद्धि व अच्छे स्वास्थ्य का परिचायक होता है। कुछ प्रयोग नीचे दिए जा रहे हैं-

चंद्रमा से प्रभावित नक्षत्रों में विशेषतया हस्त, रोहिणी और श्रवण आते हैं, इनके लिए बृष, कन्या तथा मकर ग्रह हैं, जिनके स्वामी शुक्र, बुद्ध तथा शनि हैं और इनके रंग क्रमशः सफेद, फिरोजी/हरा तथा नीला का प्रयोग तर्क संगत होगा। अन्य ग्रहों के पुट की दशा में समसम्यक रंगों का प्रयोग उचित होगा। ध्यान रहे गहरा नीला अथवा काला रंग बेचैनी तथा चिंता भी पैदा कर सकते हैं।

मंगल से प्रभावित तीन नक्षत्रों में मृगशिरा, चित्रा तथा घनिष्ठा हैं, जिनकी राशियां क्रमशः बृष से मिथुन, कन्या से तुला तथा मकर से कुंभ तक फैला होती हैं। अतः इन ग्रहों की युति तथा इनके स्वामी ग्रहों के अनुकूल रंगों एवं मिश्रण का ही प्रयोग लाभकारी होगा, जैसेः-मृगशिरा के लिए हल्का स्लेटी अथवा ग्रे अथवा सिलवर ग्रे के साथ सफेद, फिरोजी का पुट और इसी प्रकार चित्रा के लिए काला, हरा, सफेद एवं फिरोजी का पुट मंगल का लाल और नीला आदि का प्रयोग जन्म नक्षत्र की कुंडली में ग्रहों की डिग्री के अनुसार रंगों का चयन किया जा सकता है। घर में चंदन, अगरबत्ती और इत्र आदि का प्रचुरता से प्रयोग करना तथा तांबे की वस्तुओं का रखना हितकर होता है।

केतु से प्रभावित तीन नक्षत्र हैं-अश्विन, मघा तथा मूल । अश्विन नक्षत्र के जातकों के लिए 'लाल', मघा के लिए 'क्रीम' तथा हल्के 'गुलाबी' और 'कत्थई' और मूल नक्षत्र के लिए 'कथई पीला' अथवा 'पीला' होता है। इन सबका मिला स्वरुप मटमैला होता है, अतः इसका भी कमोवेश प्रयोग सार्थक हो सकता है।

राहु के तीन नक्षत्र माने जाते हैं- आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा। आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि का है और इसका स्वामी बुद्ध है, जिसका रंग हरा है, अतः आर्द्रा में जन्में जातक को हरा रंग लाभकारी होगा। स्वाति नक्षत्र तुला राशि में पड़ता है, इसका रंग काला होता है, अतः हल्के रंग का चुनाव श्रेयष्कर होगा। परन्तु इस राशि के स्वामी शुक्र को सफेद और फिरोजी रंग सबसे प्रिय हैं अतः इससे प्रभावित जातकों के लिए सफेद एवं फिरोजी मिश्रित रंग का प्रयोग लाभकारी हो सकता है। राहु का तीसरा नक्षत्र शतभिषा चूँकि कुंभ राशि में आता है, जिसका संबंध हल्के समुद्री नीले रंग से है, और इसका स्वामी ग्रह शनि को भी नीला अत्यंत प्रिय है, अतः नीला अथवा हल्का नीला रंग अत्यधिक फलदायी होगा आदि---आदि अनेकों संभावनाओं पर विचार करके अलग-अलग जातकों को अलग-अलग रंगों के प्रयोग संबंधी मशविरा के यदा-कदा संकेत प्राप्त होते हैं और इनके पीछे अपने अलग तर्क भी होते हैं।

वास्तु और अंक-शास्त्र

यह वास्तु-शास्त्र का अंक-शास्त्र ऐसा गणितीय आधारित विज्ञान है जो प्रत्येक मनुष्य के

लिए अलग-अलग और पूर्णरुपेण निजी है और इसकी शुरुआत व्यक्ति के जन्मांक से तय होता है। किसी व्यक्ति का जन्मांक एवं मूलांक जानने के लिए एक उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगा। मान लो कि किसी व्यक्ति का जन्म 19 जुलाई को हुआ, तो उस व्यक्ति का जन्मांक 19 तथा मूलांक 1+9=10=1+0=1 हुआ। इस प्रकार अंक विद्या के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति 1 से 9 अंक के भीतर ही पैदा होता है। इन नौ अक्षरों का संबंध ज्योतिष विद्या के नौ ग्रहों से है। इसमें शून्य अनंत ब्रह्मांड की तरह है और इसी में बसती हैं दसों दिशाएं। वास्तु और अंक शास्त्र को मानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह निम्न तालिका सं-1 के अनुसार अपने काम एवं भाग्य की दिशा नियत करे।

तालिका-1 जन्मांक से सफलता, स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख शान्ति तथा अपने विकास के गुण-दोष

जन्मांक	सफलता की दिशा	स्वास्थ्य की दिशा	पारिवारिक सुख शान्ति की दिशा	व्यक्तिगत विकास की दिशा
1,10,19 या 28	दक्षिण-पूर्व	पूर्व	दक्षिण	उत्तर
2,11,20 तथा 29	उत्तर-पूर्व	पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम
3,12,21 तथा 30	दक्षिण	उत्तर	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पश्चिम
4,13,22 तथा 31	उत्तर	दक्षिण	पूर्व	दक्षिण-पूर्व
5,14 और 23	उत्तर-पूर्व/दक्षिण-पश्चिम	पश्चिम/उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम या पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम/उत्तर-पूर्व
6,15 और 24	पश्चिम	उत्तर-पूर्व	दक्षिण-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम/उत्तर-पूर्व
7,16 और 25	उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम	उत्तर-पूर्व	पश्चिम
8,17 और 26	दक्षिण-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	पश्चिम	उत्तर-पूर्व
9,18 और 27	पूर्व	दक्षिण-पूर्व	उत्तर	दक्षिण

जिस तरह प्रत्येक जातक के लिए अपना एक निजी जन्मांक एवं मूलांक होता है, और प्रत्येक ऐसे अंक के साथ जुड़ी होती हैं शुभ और अशुभ दिशाएं। ठीक उसी प्रकार मूलांक के अनुसार अपनी तथा परिवार की शुभ अशुभ दिशाओं का ज्ञान निम्न तालिका सं–2 से प्राप्त किया जा सकता है ।

तालिका -2 मूलांक से जानिए दुर्भाग्य, अपमान, धनहानि, रोग, मानसिक अशांति गृह कलह

मूलांक	दुर्भाग्य की दिशा	अपमान और उपेक्षा की दिशा	धन-हानि, रोग दंड की दिशा	मानसिक अशांति एवं गृह कलह की दिशा
1	पश्चिम	उत्तर-पूर्व	उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम
2	पूर्व	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण	उत्तर
3	दक्षिण-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पूर्व	पश्चिम
4	उत्तर-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम	पश्चिम	उत्तर-पूर्व
5	पूर्व-दक्षिण	दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम
6	दक्षिण-पूर्व	पूर्व	उत्तर	पश्चिम
7	उत्तर	दक्षिण	दक्षिण-पूर्व	पूर्व

8	दक्षिण	उत्तर	पूर्व	दक्षिण-पूर्व
9	उत्तर-पूर्व	पश्चिम	दक्षिण-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

वास्तु दोष निवारण

किंचित कारणों से यदि भवन निर्माण के दौरान कोई दोष ऐसा रह जाता है तो वास्तु में उसके निवारण के कुछ गुर भी बताए हैं और उसका अनुपालन करने से वास्तु दोष के प्रभाव को न्यून किया जा सकता है। जैसे-

1. फेंगशुई घंटियां- पवन घंटियां (विंड चाइम्स)

पांच से नौ छड़ों वाली फेंगशुई घंटियां विभिन्न प्रयोजनों में प्रयुक्त की जाती हैं, जो निम्न तालिका सं-3 से स्वमेंव स्पष्ट है-

तालिका सं-3 छड़ो की संख्या पर आधारित दोष-निवारण विषय-वस्तु

क्रम सं	छड़ो की संख्या	दोष निवारण विषय वस्तु
1	5	अध्यन कक्ष के दोष मिटाने हेतु
2	6	ड्राईंग रुम
3	7	बच्चों के कमरे में
4	8	कार्यालय में
5	9	ड्राईंग रुम में यदि बार-बार निराशा आती हो

2. **लुक, फुक, साउः** यह चीनी देवताओं की मूर्तियां हैं, जो सौभाग्यवर्धक हैं। इन्हें आप शौचालय और स्नानघर को छोड़कर कहीं भी रख सकते हैं। लुक की गोद में एक बच्चे की संकल्पना है, जो वंशवृद्धि का प्रतीक है। फुक प्रसन्नता का प्रतीक है। साऊ गंजे सिर वाले हैं और इन्हें दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है। इन तीनों देवताओं के घर में एक साथ रखा जाता है। इन्हें किसी भी दिशा एवं स्थान जैसे- ऑफिस, दुकान अथवा फ़ैक्ट्री आदि में रखा जा सकता है।

3. **क्रिस्टल बॉलः** जिन लोगों का दांपत्य जीवन बिखरा-बिखरा सा या निराशाजनक है, वे अगर अपने शयनकक्ष के दक्षिण-पश्चिम भाग में क्रिस्टल(स्फटिक) बॉल लटकाएं तो उनके जीवन में वांक्षित परिवर्तन आ सकता है। यदि यही ड्राईगरुम में रखा जाय तो परिवार के बीच प्रेम बढ़ने के संकेत प्राप्त होते हैं।

4. **घंटी युक्त भाग्यशाली सिक्काः** कैरियर में सफलता और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए घंटीयुक्त सिक्के को मुख्य द्वार के दरवाजे में अंदर की ओर लगे हैंडिल पर लटकाया जाना चाहिए।

5. **नोकदार क्रिस्टलः** यदि ड्राइग रूम में टेबल पर मध्य में नोकदार क्रिस्टल रखा जाए तो व्यक्ति का जीवन काफी व्यवस्थित होगा। अगर ऐसे क्रिस्टल का उपयोग पेपरवेट के रूप में किया जाए तो कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित सफलता मिलती है।

6. **क्रिस्टल ग्लोबः** विद्यार्थियों के लिए क्रिस्टल ग्लोब काफी लाभदायक होता है। व्यापार या कैरियर निर्माण में भी इसकी भूमिका शुभ होती है। इस ग्लोब को दिन में तीन बार घुमाना चाहिए जिससे इसमें से निकलने वाली यांग ऊर्जा पूरे क्षेत्र में फैल जाए। क्रिस्टल ग्लोब को प्रयोग में लाने से पहले 24 घंटे के लिए स्टैण्ड से खोलकर नमक के घोल में रख

देना चाहिए, फिर साफ पानी से धोकर कांच के बर्तन में रखकर सुबह की धूप में दो-तीन घंटे सुखाना चाहिए। ऐसा करने से क्रिस्टल ग्लोब और प्रभावशाली हो जाता है।

7. **ऊर्जायुक्त नमकः** नमक में नकारात्मक शक्तियों को खींचने की अदभुत क्षमता होती है। फेंगशुई में प्रयोग हेतु हमेशा अपरिष्कृत समुद्री नमक का ही प्रयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग हमेशा ऐसे पात्र में करना चाहिए जिससे कि उसे ढका जा सके। यदि किसी व्यक्ति को नकारात्मक विचार अधिक आते हों तो उसे नमक मिले पानी से घर में पोछा लगाना चाहिए।

8. **लव बर्डः** प्रेम प्रसंग में सफलता स्थायित्व व निष्ठा के लिए सफेद कबुतरों का जोड़ा दक्षिण-पश्चिम कोण में रखना चाहिए। अगर सफेद कबुतरों की मूर्ति उपलब्ध नहीं होती तो उनका चित्र भी लगाया जा सकता है।

9. **एक्वेरियमः** घर में एक छोटे से एक्वेरियरम (मछलीघर) में सुनहरी मछलियां पालना सौभाग्यवर्धक होता है। ध्यान रहे कि एक्वेरियम में आठ मछलियां सुनहरी और एक काले रंग की होनी चाहिए। अगर कोई सुनहरी मछली मर जाए तो माना जाता है कि घर पर आई कोई मुसीबत वह अपने साथ ले गई यानी सुनहरी मछली का मरना अपशकुन नहीं होता। एक्वेरियम को मुख्यद्वार के समीप नहीं रखना चाहिए।

10. **दर्पणः** फेंगशुई में दर्पण को ऊर्जा का स्रोत माना गया है। परिवार की सुख -समृद्धि के लिए भोजनकक्ष में ऐसे स्थान पर दर्पण रखना चाहिए, जहां भोजन करते समय प्रतिबिंब दिखाई दे।

11. **पानी का फव्वाराः** यदि आपके कार्यक्षेत्र में बार-बार व्यवधान आ रहे हैं और किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही है तो उत्तर दिशा में बहते पानी का फव्वारा रखने में सफलता मिलेगी।

12. **संगीत घड़ीः** मधुर संगीत उत्पन्न करने वाली घड़ी घर में ऊर्जा का संतुलन बनाती है। ऐसी घड़ी घर के बाहर बरामदे में या गैलरी में नहीं लगानी चाहिए। हर समय ध्वनि पैदा करने वाली घड़ी भी नकारात्मक प्रभाव डालती है।

13. **एजुकेशन टावरः** एकाग्रता व शिक्षा के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए एजुकेशन टावर का उपयोग किया जा सकता है। इससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ता है जो विद्यार्थियों को मानसिक रूप में एकाग्र करता है।

गृह प्रवेश हेतु सही समय का चुनाव

नवरात्र का समूचा पक्ष यानी प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का समय नए-पुराने गृह प्रवेश और वास्तु दोष के निवारण के लिए पूजन करने के लिए सर्वोत्तम समय होता है। गृह प्रवेश व्यक्ति तीन प्रकार से करता हः- 1. सपूर्व गृह प्रवेश 2. द्वंद्व रूप में गृह प्रवेश 3.अपूर्व या नूतन गृह प्रवेश।

इन सभी प्रवेशों के अलग-अलग नियम हैं। यदि नवीन भवन या आवास आदि में कुछ वास्तु दोष रह जाता है तो उसके निवारण हेतु भी दोष निवारक यंत्र और प्रतीक चिन्ह आदि भी नवरात्र में गृह स्वामी की नाम राशि के अनुसार शुभ तिथि-नक्षत्र और मुहूर्त का विचार करके किया जा सकता है।

सपूर्व गृहप्रवेश वह है जिसमें गृह स्वामी मकान या फ्लैट आदि में पहली बार प्रवेश नहीं कर रहा हो अर्थात ऐसा मकान या फ्लैट जो दूसरों के कब्जे में हो और खाली होने के उपरांत गृहस्वामी स्वयं आवास करने के लिए प्रवेश करे। सपूर्व प्रवेश उस मकान का भी होता है जिसमें वह

लंबी यात्रा तीर्थाटन करके विदेश भ्रमण करके वर्षो तक बंद पड़ें रहने के बाद या फिर सूक्ष्म निर्माण संशोधन आदि करने के बाद गृह स्वामी स्थाई तौर पर निवास करने हेतु करे। जीर्णोद्धार के बाद तो अवश्य ही सपूर्व प्रवेश नियमानुसार शुभ चन्द्रमा और वार और रिक्ता तिथि के बचाव के बाद करना जरूरी होगा। ऐसे समय में मकान में मंदिर आदि की स्थापना करके उसमें वास्तु दोष निवारक यंत्र और श्रीलक्ष्मी यंत्र -कुबेर यंत्र आदि की स्थापना करे। यदि गृह स्वामी के आधे मकान पर किरायेदार का कब्जा हो और आधा क्षेत्र उसके पास हो तो फिर उत्तर दिशा में बंगलामुखी यंत्र की स्थापना भी करनी चाहिए। विवादग्रस्त मकान पर कब्जा मिलने के बाद भी सपूर्व प्रवेश विधिवत करना चाहिए।

द्वंद प्रवेश वह है जिसमें गृहस्वामी पहले तो रहता है परन्तु किसी कारण मकान, भवन को आग लगने के कारण, दीवार गिरने या फिर छत सुधार के बाद या फिर किसी कारण क्षत-विक्षत होने पर जीर्णोद्वार करके गृहस्वामी इसमें प्रवेश करेगा तो उसे द्वंद प्रवेश कहेंगे। यह प्रवेश भी उचित चंद्रमा-नक्षत्र वार तिथि का संशोधन करके करना चाहिए।

अपूर्व या नूतन गृह प्रवेश वह है जिसमें गृह स्वामी अपने परिवारजनों के साथ पहली बार आवास करने हेतु दाखिल होता है। यह गृह प्रवेश चूंकि पहली बार हो रहा है अतः सर्वप्रथम ईशान कोण में मंदिर - बेदी पूजा अर्चना का स्थान निर्धारित -घर के बीच में ब्रह्म स्थान का चयन करके और उसमें वास्तु देव का चित्र या ताम्र यंत्र रखकर काल निर्धारण आदि शुद्ध पंचांग पूजा के उपरान्त पूर्वान्ह के समय राहू काल आदि का बचाव करके स्थिर लग्न में करना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार -चैत्र मास, उत्तरायण -बसंत या ग्रीष्म ऋतु में जब सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में हो, चन्द्रमा शुक्ल पक्ष का और आधे से अधिक आकार का नजर आये तभी नूतन गृह प्रवेश करना चाहिए।

घर में खुशहाली लाने के कुछ अन्य उपाय

दिशा क्षेत्रों के ऊर्जा वलयों के चरित्र के अध्ययन के बाद आइए देखें कि फेंगशुई में कौन-कौन सी वस्तुएं हैं जो इन ऊर्जा वलयों को प्रभावित कर भाग्योन्नति का मार्ग प्रशस्त करतीं हैं।

1- **लाफिंग बुद्धाः** यह हंसती हुई बुद्ध की मूर्ति है। जो धन, सुख-समृद्धि और सौभाग्य की प्रतीक मानी जाती है। कहते हैं कि इस मूर्ति को घर में रखने से घर का माहौल खुशनुमा होता है। माना जाता है कि इस मूर्ति का बढ़ा हुआ पेट घर के हर सदस्य के दुख और बीमारियों को अपने में समा लेता है। इस मूर्ति की पूजा नहीं की जाती और न ही इसे जमीन पर रखा जाता है। सामान्यतः लाफिंग बुद्धा की मूर्ति ड्राइंगरूम और लाबी क्षेत्र में मुख्य द्वार के सामने की ओर मुह करके रखी जाती है। माना जाता है कि द्वार से जो ऊर्जा घर में प्रवेश करती है, लाफिंग बुद्धा उसे सकारात्मक ऊर्जा में बदल देते हैं।

2- **कछुआः** फेंगशुई में दूसरा प्रतीक है कछुआ। माना जाता है कि घर मे कछुए की उपस्थिति हमें लंबी आयु प्रदान करती है। साथ ही बीमारियों और शत्रुओं से रक्षा भी। कैरियर अथवा व्यवसाय में वृद्धि हेतु धातु के कछुए को पानी से भरे जार में रखकर उत्तर दिशा में रखना चाहिए। यदि शयनकक्ष में कछुआ रखना चाहते हैं तो पानी की भी आवश्यकता नहीं।

3- **ड्रेगन के मुंह वाला कछुआः** यह हमें लंबी उम्र और शत्रुओं से बचने को रक्षा कवच प्रदान करता है। इसके अलावा यह सफलता और सौभाग्य का प्रतीक है। इसे शयनकक्ष में नहीं रखना चाहिए। इसे घर की बैठक की उत्तर या पूर्व दिशा में रखते हैं। अगर आप इसे अपने आफिस में रखना चाहते हैं तो अपनी कुर्सी के पीछे समानांतर

या दांयी ओर रख सकते हैं। इसे कभी भी कुर्सी के सामनें की ओर नहीं रखना चाहिए।

4- **तीन पैरों वाला मेंढकः** फेंगशुई में तीन पैरों वाले मेढ़क का उपयोग धन और भाग्य को सक्रिय करने में किया जाता है। इसे घर के मुख्य द्वार पर इस तरह रखना चाहिए कि लगे , यह घर के अन्दर आ रहा है। यदि मेढ़क का मुंह बाहर की ओर कर देंगे तो प्रभाव उल्टा हो जाएगा। इसे भूलकर भी शोचालय और रसोई में न रखें।

5- **सौभाग्यशाली ड्रेगनः** फेंगशुई में इसका बड़ा महत्व है। इसे ड्राइंग रूम में लगाना चाहिए और भूलकर भी शयनकक्ष में नहीं लगाना चाहिए। इसके अलावा इसे टीवी, फ्रिज या शो केस में रखें। साथ ही ध्यान रखें कि यह ज्यादा ऊंचाई पर न रखा हो। ऐसे ड्रेगन को ऑफिस , दुकान, रेस्टोरेंट, डिपार्टमेंटल स्टोर आदि में रखना बहुत लाभकारी होता है। इसे पूर्व दिशा में ही रखना चाहिए लेकिन ध्यान रहे कि यह ड्रेगन धातु का न हो।

6- **मैडरिन डकः** मैडरिन डक रखने से लड़के/लड़की के विवाह में आ रही बाधाएं दूर होती हैं। यदि लड़के के विवाह में बाधाएं आ रही हैं तो उसके शयनकक्ष से पुरूष प्रधान वस्तुओं को कम जगह देनी चाहिए जैसे ब्रीफकेश, ऐशट्रे, अभिनेताओं और खिलाड़ियों के फोटों आदि। हो सके तो इनकी जगह सुंदर गुलदस्ते, फूल व सुंदर महिलाओं के फोटो लगाने चाहिए। यही बात लड़की पर लागू होती है । इसके अलावा कमरें में मैडरिन डक का जोड़ा लगाएं। यह इस बात का प्रतीक है कि विवाह के बाद नवदंपति सदैव प्रेमपूर्वक जीवन बीताएंगे। इसे कमरे में दक्षिण - पश्चिम में जगह दें।

प्रस्तुत लेख की सामग्री पत्र-पत्रिकाओं के समय-समय पर हिन्दी में प्रकाशित अनान्य लेखों से संग्रहीत की गई है, जिसका प्रयोजन भवन निर्माण से जुड़ी उन तमाम मान्यताओं को प्रबुद्ध वैज्ञानिक वर्ग के समक्ष लाना है, जिससे भवन-निर्माण आदि से जुड़े वैज्ञानिक, अभियंता इसके अन्य पक्षों पर गहनता से विचार कर सकें तथा इससे जुड़ी अंतर्निहित प्राचीन परावैज्ञानिक मान्यताओं को आज़ के परिप्रेक्ष्य में देख-समझ कर यदि इनमें कुछ तथ्य दिखायी पडे तो इस विद्या को भी भवन-निर्माण के ड्राइंग-दिजाइन में समाकलित कर एक ऐसे विधा के रुप में प्रस्तुत किया जा सके, जिससे वास्तु के मतावलंबियों को सकून की जिंदगी मिल सके। यदि यह प्रस्तुति भवन निर्माण को कोई दिशा दे सके अथवा कुछ इस विधा में योगदान कर सके तो यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी और मेरा यह संकलन प्रयास सार्थक साबित होगा। चूंकि यह लेख पुराने दीर्घप्रचलित विश्वासों और मतों, मान्यताओं पर आधारित है, वैज्ञानिक चाहें तो इसकी प्रमाणिकता साबित करने के लिए इस विषय पर उपलब्ध अन्य पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथो का सहारा लेने में कोई परहेज़ न करें।